परमात्मा के वरदानों से बढ़कर कोई वरदान नहीं

चण्डीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति के सुंदर विषय को लेकर ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित वैश्विक महोत्सव को सम्बोधित करते हुए कहा कि एक ईश्वर ही सर्व शक्तियों का भण्डार है। हम आज ईश्वर के उसूलों को छोडते जा रहे हैं और धन की दौड़ में अपनी राह भटक गए हैं। ईमानदारी की कमाई में ही बड़ी खुशी है। परमात्मा के वरदानों से बढ़कर दूसरी कोई चीज नहीं। यदि हम स्वयं को परमात्मा की संतान मान लें तो भी समाज में हो रही गिरावट खत्म हो सकती है। ब्रह्माकुमारी बहनें गांव-गांव जाकर परमात्मा का संदेश पहुंचा कर समाज पर बहुत परोपकार कर रही हैं। मैं हर साल ब्रह्माकुमारी बहनों से राखी बंधवाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करता हूँ। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा की जा रही समाज की सच्ची सेवा की प्रशंसा करते हुए उन्होने इन शिक्षाओं को जीवन में उतारने के लिए सभी को प्रेरित किया।

ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.प्रेमलता दीदी ने कहा कि अध्यात्म ही स्व को जानने का एकमेव रास्ता है। ईश्वर की शिक्षाओं पर चलकर ही हम उनसे परमात्म वरदान प्राप्त कर सकते हैं। सच्चा सुख व संतोष भौतिक प्राप्तियों व बाह्य उपलब्धियों में नहीं बल्कि आंतरिक उपलब्धियों में है। मन की अशांति, तनाव व परेशानी का कारण नकारात्मक विचार है।

आक्सफोर्ड से आए मैनेजमेंट कन्सलटैंट ब्र.कु.एन्थोनी फिलिप ने कहा कि सभी प्रकार के मानवीय प्रयासों के बावजूद विश्व की समस्याएं दिनोदिन बढ़ती जा रही हैं। ऐसे समय में परमात्म-शक्तियों की इंसान को बहुत जरूरत है। ब्रह्माकुमारी संस्था ने मुझे तनावपूर्ण जीवन से निजात दिलाकर खुशनुमा जीवन जीने की कला सिखाई।

हालैण्ड से आई राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.जैक्यूलिन बर्ग ने कहा कि आज जब मनुष्यों की बुद्धि क्रोध, लोभ व अहंकार रूपी विकारों से ग्रसित हो गई है तो ऐसे में सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा ही एकमात्र स्रोत है जो अपनी शक्तियों व वरदानों से सम्पूर्ण संसार को सुख और शांति प्रदान कर सकते हैं। आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाने से हमारा जीवन दिव्य गुणों से महक जाता है। भारत आकर मुझे अपने घर जैसा महसूस होता है।

संस्था के पंजाब जोन की निदेशिका ब्र.कु.अचल दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान व ईश्वरीय शक्तियों से हम अपने जीवन से बुराइयों को दूर कर सकते हैं। ईश्वर की याद में किया गया काम हमें हर कदम पर सफलता दिलाता है।

ब्रह्माकुमारीज समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.अमीरचंद ने कहा कि हम अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनें, बुराईयों को छोड़ें, नेक काम करें, सबको खुशी बांटें तो ईश्वर के वरदान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार बन जाएंगे। हमें प्रभु से वरदान मांगने की आवश्यकता नहीं बल्कि इसके लिए हमें खुद को योग्य व पात्र बनाना होगा।

51 राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास भी कराया गया।

समाज में प्रेम व शान्ति का वातावरण लायेगा यह उत्सव

पटना। बिहार के राज्यपाल महामहिम देवानंद कुंवर ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा गांधी मैदान में परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति हेतु आयोजित वैश्विक महोत्सव में उपस्थित एक लाख से भी अधिक के विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज मेडिटेशन के प्रति सभी लोग आकर्षित हो रहे हैं। मुझे इस बात की जानकारी थी कि ब्रह्माकुमारी संस्था के द्वारा सहज रूप से मेडिटेशन की शिक्षा सारे विश्व को दी जाती है। बिहार की धरती गुरू गोविंद सिंह, बुद्ध, महावीर जैसी महान आत्माओं का स्थान रहा है। यह सर्व धर्मावलम्बियों का स्थान रहा है। यह संस्था 73 वर्षों से 130 देशों में अपना कार्य कर रही है यह बहुत ही हर्ष की बात है। मुझे विश्वास है कि इन उत्सवों से लोगों में भारत की महान संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जगेगी तथा समाज में प्रेम, शान्ति व मानवता का वातावरण बनेगा।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि महान उद्देश्य को लेकर मनाया जा रहा यह उत्सव परमात्म वरदानों की अनुभूति करायेगा। मेडिटेशन भी एक अच्छा तरीका है बेचैन मन पर काबू पाने का। अपने को आत्मा समझ परमात्मा को याद करने की यह राजयोग की विधि बहुत कुछ प्राप्त कराती है। इस गांधी मैदान में हर साल रावण का पुतला जलाते हैं लेकिन आप क्रोध रूपी रावण को जलाकर सच्चा दशहरा

-शेष पेज 11 पर

पत्र-व्यवहार

संयुक्त संपादक : ब्र.कु.गंगाधर
ओम् शान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज्, ज्ञानसरोवर
पो.बा.नं.-66, माउण्टआबू (राज.)
307501, फोन -02974-235036,
EPABX-238788, फैक्स -02974-238951, M -9414154344
E-mail-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क

भारत - वार्षिक 140 रूपये,
तीन वर्ष 410 रूपये
आजीवन 1800 रूपये
विदेश - 1500 *रूपये (वार्षिक)*

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें ।

RNI NO RAJHIN/2000/721 LINCENCE TO POST WITHOUT PRE PAYMENT UNDER TECH/W R /47-9/2009-2011 Postal Regd.No.RJ/SRO/9623/2009-2011, Posted at SHANTIVAN P.O. DT. 22nd,24th&10th,12th
सम्पादक:कमल दीक्षित,ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए ब्र.कु.करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

ओमशान्ति मीडिया

(पाक्षिक)

वर्ष - 10 अंक - 15 नवम्बर-I, 2009 माउण्ट आबू मूल्य 6.00 रु.

आध्यात्मिकता में निहित है आज की समस्याओं का समाधान

नई दिल्ली। वैश्विक महोत्सव का उद्घाटन करते हुए पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, दादी हृदयमोहिनी, स्वामी अग्निवेश, ब्र.कु.सुदेश बहन, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.रजनी तथा अन्य।

नई दिल्ली। पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा रामलीला मैदान में परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की अनुभूति हेतु आयोजित वैश्विक महोत्सव में उपस्थित देश-विदेश के हजारों लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान समाज में व्याप्त समस्याओं का समाधान आध्यात्मिकता में ही निहित है। विजयादशमी पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम इस पर्व पर कम से कम एक बुराई का त्याग करें और एक अच्छाई ग्रहण करें। लोग महान व्यक्ति के भाषण व प्रवचन के बजाय उनके व्यवहार का अनुसरण करते हैं। इस मैदान पर मैने पहले भी कई कार्यक्रमों में भाग लिया है लेकिन आज की इस अलौकिक सभा ने मेरे दिल पर एक अलग छाप बना दी है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की अति.मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि परमपिता परमात्मा से दिव्य शक्तियां, वरदान, शान्ति तथा खुशियां प्राप्त करने के लिए चलाये जा रहे इस अभियान से अवश्य ही दुख, चिन्ता व तनाव का माहौल उमंग-उत्साह व खुशी में परिवर्तित हो जायेगा। विश्व भर के लोग आध्यात्मिक सार्वभौमिक मूल्यों, राजयोग, ध्यान, सकारात्मक तथा स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर अपने जीवन को सुखी, शांत, संतुष्ट बना सकेंगे।

इस अवसर पर संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से लोगों को परमपिता परमात्मा शिव का संदेश दिया।

यूरोप स्थित ब्रह्माकुमारीज सेंटर्स की निदेशिका ब्र.कु.सुदेश ने कहा कि आध्यात्मिकता ही यह बोध कराती है

-शेष पेज 8 पर

'परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की अनुभूति हेतु वैश्विक महोत्सव' का 3 व 4 अक्टूबर को नई दिल्ली, चण्डीगढ़, जयपुर, लखनऊ, पटना, कलकत्ता, गुवाहटी, रांची, भुवनेश्वर, हैदराबाद, बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई, अहमदाबाद, भोपाल व रायपुर में भव्य शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किए गये। इसके बाद आगामी 50 दिनों तक देशभर व विश्व भर के विभिन्न शहरों में इसी प्रकार के समारोह आयोजित किए जाएंगे। इस अभियान का समापन समारोह संस्था के मुख्यालय माऊण्ट आबू में 22 नवम्बर 09 को आयोजित किया जायेगा।

आध्यात्मिकता के माध्यम से हो सकता है पर्यावरण परिवर्तन

नई दिल्ली। फ्रांस से विशेष तौर पर भारत आए मैनेजमेंट कंसलटेंट मार्क फोर्केड ने बताया कि वैज्ञानिकों द्वारा किए एक शोध में निकले निष्कर्ष के अनुसार आध्यात्मिकता को अपनाने से व्यक्ति की भावनात्मक बौद्धिकता में वृद्धि होती है। इस वृद्धि से व्यक्ति के आपसी सम्बन्ध मधुर और कार्यक्षमता बढ़सकती है। ब्रह्माकुमारी संस्था से पिछले दो दशकों से जुड़े मार्क ने भारत को मातृभूमि बताते हुए अपने जीवन में राजयोग द्वारा हुए परमात्म-शक्ति के अनुभव सुनाकर सभा को हतप्रभ कर दिया। वे ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिरी फोर्ट आडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

दिल्ली के मुख्य सचिव राकेश मेहता ने कहा कि आध्यात्मिकता के माध्यम से नयी जीवन शैली अपनाकर पर्यावरण परिवर्तन तथा ग्रीन हाउस इफेक्ट जैसी वैश्विक समस्याओं पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं। समाज में व्याप्त लालच पर आधारित नीति को त्यागकर हमें जरूरत पर आधारित नीति को अपनाना होगा। पिछले कई दशकों से ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व में वर्तमान समय आवश्यक परिवर्तन की नीति को क्रियान्वित कर शांति स्थापना के नि:स्वार्थ कार्य में जुटी हुई है। इस वैश्विक उत्सव की सार्थकता तभी है जब हम राजयोग, ध्यान आदि विधि को अपने जीवन में अपनाकर सच्चा प्रेम, शान्तिपूर्ण व सुखमय जीवन जीएं।

यूएन में ब्रह्माकुमारीज की प्रतिनिधि ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि नकारात्मक जीवनशैली के कारण हमारी बैटरी डिस्चार्ज हो गई है। इसी कारण सभी सुख-

सुविधाओं के साधन उपलब्ध होते हुए भी मनुष्य निराशा, तनाव, चिन्ता व भय आदि समस्याओं से ग्रस्त है। ज्ञान-शक्ति, योगबल व आत्मिक-शक्ति के साथ-साथ परमपिता परमात्मा शिव से वरदान लेकर ही हम सभी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

युनेस्को के डायरेक्टर व मारिशियस के पूर्व शिक्षा मत्री परशुरमन ने बताया कि 1986 से ही मारिशियस में ब्रह्माकुमारी संस्था के सहयोग से स्कूलों में शान्ति, मानवता, सेवा पर आधारित मूल्य आधारित शिक्षा दी जा रही है। ब्रह्माकुमारी संस्था ने इन सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारकर इनकी सार्थकता सिद्ध की है। मुंजाल शोवा लिमिटेड के चेयरमेन व एम डी योगेश मुंजाल व बजाज मोटर्स लिमि.के चेयरमैन बीपी बजाज ने ब्रह्माकुमारी संस्था के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि संस्था अन्य किसी की आलोचना करने के स्थान पर स्व-उन्नति व स्व-परिवर्तन की बात करती है जो अनुकरणीय है। सकारात्मक सोच से व्यक्तित्व निखरता है यह बात संस्था ने अपनी सेवाओं से साबित करके दिखाया है।

विश्व प्रसिद्ध पंडित बिरजू महाराज के शिष्य एवं भारत-गौरव पुरस्कार प्राप्त पंडित पुलकित मिश्रा ने कहा कत्थक नृत्य अध्यात्म से जुड़ा हुआ है। मेडिटेशन करने से काफी आसानी से भावपूर्ण व विभिन्न मुद्राओं से सुसज्जित नृत्य किया जा सकता है।

प्यूरिटी मैगजीन के सम्पादक ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि परमात्म-शक्ति प्राप्त करने के लिए हमें घर या परिवार को त्यागना नहीं है बल्कि इस प्राप्ति के लिए हमें स्वार्थ-वृत्ति, विकारों एवं बुराइयों को त्यागने की आवश्यकता है। घर-परिवार में रहते हुए हम परमात्म-अनुभूति कर जीवन सफल कर सकते हैं।

ओआरसी की निदेशिका ब्र.कु.आशा तथा ब्र.कु.शुक्ला ने भी सम्बोधित किया। मंच संचालन ब्र.कु.शांति ने किया। इस अवसर पर दादी कमलमणि व दादी रूकमणि ने अतिथिगणों को सम्मानित किया। माउण्टआबू से आए ब्र.कु.नितिन ने पुरूष व स्त्री की आवाज में भजन गाकर सभी दर्शकों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

दादियों के श्रीमुख से...

योगी वह हैं जिसके अंग-अंग शीतल हों

शिव बाबा की बातें सबसे न्यारी हैं, जो पुरानी और पराई बातें खत्म कर देती हैं, खुशी का पारा चढ़ा देती हैं। जिसके पास बहुत खुशी होती है तो और किसको क्या देवे, जो होगा वही तो देगा ना।

ब्रह्मा बाबा से इतनी पहचान मिली कि ये मेरा बाबा है। अभिमान भी गया, अटैचमेंट भी गई। आत्मा 63 जन्म से अभिमानी बन गई। परमात्मा पिता कहता है देख तेरे में अभिमान आ गया। सम्बन्धों का भी अभिमान आता है, उसमें फिर लोभ-मोह भी आ गया है। लोभ-मोह के कारण गुस्सा भी आ गया है। थोड़ा भी किसी में गुस्सा है तो समझ जाएं अभिमान के कारण है। अभिमान के कारण संतुष्ट नहीं हैं। ब्रह्मा बाबा को सामने रखो तो अभिमान छूट जाता है। बच्चा हूँ ना, मेरा बाबा है ना! वो बचपन का सुख अंतिम घड़ी तक रहे, जैसे ब्रह्मा बाबा ने अंतिम घड़ी तक स्मृति में रहने का पार्ट बजाया। निराकारी स्थिति में रहकर, निर्विकारी बन, निरहंकारी रूप दिखाया। इतना भी कभी अंशमात्र अहंकार वा आवेश में नहीं देखा। अभी अव्यक्त होकर भी सभी को बहुत प्यार करता है, समझानी देता है, पर अंदर कितना शीतल है। बाबा कहता था बच्चे, योगी अर्थात शीतल काया वाले, अंग-अंग शीतल। चलन से भी शीतलता का अनुभव हो, औरों की तपत बुझाने वाली। किसी भी कारण से गुस्सा न आवे, आवेश की भी उत्पत्ति हुई तो फेल। योगी शीतल तभी हैं जब स्वीट साइलेन्स में रहता है।

असली घर हमारा शान्तिधाम है। संगमयुग पर मधुबन है। यहाँ सदा मेहमान हैं। अपने को सदा मेहमान समझना महान आत्मा का काम है। ईश्वर कितना प्यार देता है जो अपनी भी बातें भूल जायें, सारी दुनिया की बातें भूल जायें। इतनी उसकी याद हो जो हमारे सामने आये उसको भी बाप की याद दिलायें और कोई तो काम है नहीं। संगमयुगी हैं, सम्पन्न और सम्पूर्ण मेरे को बनना है। ये बने वो बने इसकी चिन्ता भगवान करे, मैं क्यों करूं।

जैसे बाबा की मुस्कराहट में ही सब खुश हो जाते हैं। ऐसी याद और मुस्कराहट हो। जब मेरे को खुशी का अनुभव है तो मेरे को देख और खुश हो जावें। जिसको जितना अनुभव है, उसी अनुसार चल रहे हैं तो क्यों नहीं अनुभव को बढ़ायें। संगमयुग है ना। आपस में मिलकर अनुभव की लेन-देन करें। सभी दीदी और दादियों के चेहरे में बाबा के लिए प्यार है और सभी का आपस में प्यार है। चेहरा सेवा कर रहा है। अभी आप सब ऐसे बन जाओ ना। जैसे बाबा ने पालना थोड़ों को दी, पालना का प्रैक्टिकल स्वरूप दादियों में देखा है, अभी आप सब ऐसे ही दूसरों की पालना करो।

परमात्मा क्या है, कौन है, कैसा है, बुद्धि ने समझा। परमात्म-सुख का अनुभव किया। बाबा को ऐसे बच्चे अच्छे लगते हैं। जिनको बाबा अच्छा लगता है, बाबा को वो अच्छे लगते हैं। बीच में किसी कारण से भी बाबा को पीठ न करें, बड़ा नुकसान है। उसके डायरेक्शन को अमल करें, श्रीमत को माथे पर रखें -बड़ा फायदा है। बाबा ने जो मर्यादाएं बताई हैं, उस पर चलने से बड़ी शक्ति मिलती है। अमृतवेले से रात्रि तक नियम बनाकर दिया है। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से सुनुं...बाबा को सब पता है, क्या बताऊं, बाबा इशारा करेगा...तुम सोचो मत, हो जायेगा। तन से हो, धन से हो, सम्बन्ध से हो -करा देता है। मेरे को थोड़े ही करना है। इसमें भाऊ विश्व किशोर नम्बरवन था। कभी नहीं कहा मैंने किया, बाबा ने कराया। तुम्हीं संग रहूँ, तुम्हीं संग खाऊं, इसका सुख बहुत है, कोई क्वेश्चन नहीं। थोड़ा याद की गहराई में जायेंगे तो न कोई मित्र, न कोई सम्बन्धी।

थोड़ा भी अभिमान दुश्मन है। अभिमान होने से भगवान जो वरदान देता है वो काम नहीं करेगा। बोलचाल में अभिमान जरा भी न हो, सच्चे बच्चे इस बात का बहुत ध्यान रखते हैं। सब कुछ सहज हो रहा है, बाबा आपे ही प्रेरणा देता है, आपेही सेवा की ऑफर करते हैं। बाबा ने केवल शान्त रहना सिखाया है। ●

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

योगयुक्त माना डबल लाइट

शिव बाबा क्या चाहता है? मेरा हर एक बच्चा राजा बच्चा बने। स्व के ऊपर राज्य है तो वो स्वराज्य अधिकारी बच्चे हुए। आत्मा मालिक है, अपनी अवस्था में अच्छा है, अधिकारी है राज्य करने के तो सब आर्डर में चलेंगे, कभी कोई रिपोर्ट नहीं निकलेगी। अगर साथी संतुष्ट नहीं हैं तो असंतुष्टता की बातें सुनकर किसी के भी व्यर्थ संकल्प चलेंगे। योगयुक्त अवस्था नहीं हो सकती। योगयुक्त अवस्था माना डबल लाइट। आत्मा तो है ही लाइट, तो उसी स्थिति में स्थित होंगे। कोई फिकर नहीं, बेफिकर बादशाह। तो बाबा से प्यार है, दादियों से प्यार, आपस में प्यार है...इसी प्यार ने तो आकर्षण किया है। प्यार ऐसी चीज है जो छोटी-सी चीज भी संतुष्ट कर देती है। बाबा से प्यार है माना जो उनकी विशेषता है उस पर न्यौछावर। बाबा से प्यार है तो उसका रिटर्न है जो बाबा ने कहा वो मैंने किया, बस।

हर मुरली में रोज हम सबको श्रीमत मिलती है -क्या करो, क्या नहीं करो। याद करो तो कैसे करो, धारणा क्या करो। बाबा एक ही मुरली में चारों विषय पर प्रकाश डालते हैं। रात्रि को जब सोने जाते हो उस समय सारे दिन का समाचार अच्छा या साधारण जो भी हुआ, उसे बाबा को सुनाकर खाली होकर सो जाओ तो नींद बहुत अच्छी आयेगी। फिर दूसरे दिन नया दिन, नई बातें। तो जो भी कुछ है वो सब बाबा को सुना दो। इससे खाली भी हो जायेंगे, बाबा से दृष्टि भी मिलेगी और दिल से मेरा बाबा मेरा बाबा कहेंगे तो बाबा इमर्ज हो जायेगा। अपने को अकेले नहीं समझो। खुदा दोस्त समझ उससे बातें करो। जहाँ भी हैं वहां बाबा को दिल से याद करो तो बाबा हमारा सुनेगा और बाबा हमको रेसपांड देगा और मदद भी करेगा। लेकिन बुद्धि खाली हो तो टचिंग हो। बुद्धि क्लीन और क्लीयर होने से ऐसे लगेगा जैसे बाबा से रूबरू बात कर रहे हैं। बिल्कुल सामने जैसे बाबा बैठा है, हमारी बुद्धि को बाबा टचिंग कर रहा है। बाबा को बात देने से बात खत्म हो जाती है।

मनसा सेवा करने से एक तो अपना मन बिजी रहेगा, दूसरा हम जहाँ भी रहते वहां का वायुमण्डल अच्छा बनाने में हम सहयोगी बनेंगे। तीसरा फायदा, जो दु:खी आत्माएं हैं उनको भी हम सकाश देंगे और इसमें हमको बिजी देख माया भी वापिस चली जायेगी इसलिए मनसा सेवा करो या मुरली का ज्ञान का मनन करो। योग में तो रहना ही है लेकिन मनन करने से भी खुशी होती है। जो भी मुरली चली उसकी कोई भी चार-पाँच प्वाइंट्स अपने मन में नोट करो एक-एक शब्द में फिर आपको बहुत फायदा होगा। तो मनन और मनसा सेवा यह दोनों ट्रायल करके देखो तो माया आपे ही दूर भाग जायेगी। ●

परमात्मा से ज्ञान-शक्ति व शुभ कर्म की प्रेरणा मांगें

चेन्नई। अनबुमिगु गंगल अमारन सरीखे लोकप्रिय संगीत निदेशक के आध्यात्मिकता भरे संगीत ने वैश्विक उत्सव के शुभारंभ को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया। नृत्य प्रशिक्षण शाला के कलाकारों ने अपनी प्रतिभा की गहरी छाप दर्शकों पर छोड़ी।

उत्सव को यादगार बनाने के लिए विशेष रूप से पधारे आस्ट्रेलिया के ब्र.कु.चार्ली ने करतल ध्वनि के बीच अमेरिका स्थित ब्रह्माकुमारी केन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.मोहिनी बहन को आशीर्वचन के लिए आमंत्रित किया।

स्वास्थ्य से जुड़े कारणों की विवशता के चलते संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के उपस्थित न हो पाने की सूचना देते हुए ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि यदि परमात्मा हमारे समक्ष स्वयं अवतरित हो जाए और पूछे तुम्हें कौन सी शक्ति चाहिए तो लोगों के मन में त्वरित रूप

से अनेक बातें उभर आएंगी। लेकिन मेरे विचार में तीन बातें उत्तम हैं। सर्वप्रथम हम शुद्ध मन के लिए ज्ञान-शक्ति मांगे। गांधीजी ने भी परमात्मा से श्रेष्ठ हृदय व विचारों का आग्रह किया था। दूसरी अहम बात आत्मा-शक्ति के लिए अच्छे लोगों से सम्पर्क। तीसरी शक्ति अच्छे कार्य करने की प्रेरणा है।

उत्सव का महत्व बढ़ाने वाले क्षण थे -108 राजयोगिनी बहनों द्वारा सामूहिक राजयोगाभ्यास। पूरा वातावरण शान्ति एवं सद्भाव से सराबोर हो गया। मंच पर आसीन थे उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एस. तमिलवनन, मेयर एम.सुब्रामनियन, पद्मभूषण डॉ.सरोजनी वरद्पन, मुख्य काजी मुफ्ती मोहम्मद अयूब, स्वामी विमूर्तानंद जी (रामकृष्ण मठ) ने कार्यक्रम को सुशोभित किया।

डॉ.एम.एम.चिन्नपा व तमिलनाडु के पुलिस महानिदेशक के.पी.जैन ने भी उत्सव की गरिमा बढ़ायी। जोनल प्रभारी ब्र.कु.अन्नपूर्णा, सेवा समन्वयक ब्र.कु.बीना ने भी ब्र.कु.सुन्दरम द्वारा संचालित कार्यक्रम के दौरान ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए। एक लाख से अधिक लोगों ने वैश्विक उत्सव के दौरान स्वास्थ्य, शान्ति झोपड़ी, राजयोग प्रदर्शनी, बारह ज्योतिर्लिंगमों की झांकियों एवं चैतन्य देवियों की झांकी का अवलोकन कर उत्सव की सराहना की।

ईश्वरीय शक्तियां ही विश्व को एकता सूत्र में बांधेंगी

रांची। संसार को स्वर्ग बनाना हो तो इंसान को देवता बनने की जरूरत है। आज के समय में इंसान, इंसान से ही दुखी है। सब कुछ होते हुए भी लोगों को शांति नहीं नहीं मिल पा रही है। भौतिकता की चकाचौंध में खोये मानव

को सच्ची शांति के लिए आध्यात्मिकता की ओर तो रूख करना ही होगा, साथ ही अपने व्यवहार और संस्कार में बदलाव लाना होगा।

उक्त विचार माउण्ट आबू से पधारीं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा परमात्म अनुभूति एवं वरदानों की प्राप्ति के लिए आयोजित दो दिवसीय वैश्विक महोत्सव में व्यक्त किए। उन्होने कहा कि दुनिया आज ग्लोबल विलेज बन चुकी है। इन्फॉर्मेशन टेक्नालॉजी के जरिये आज हर कोई घर बैठे दुनिया भर की खबरें देख सकता है, पढ़ सकता है। जो सूचना चाहिए क्षण भर में हाजिर है। यह सब कुछ विज्ञान व तकनीकी के विकास से संभव हुआ है, भौतिक दृष्टि से सारा जगत मानो स्वर्ग का नमूना-सा बन रहा है? लेकिन सचमुच स्वर्णिम भारत बनाना है तो आध्यात्मिकता द्वारा स्वयं में देव-संस्कृति के अनुरूप आचरण लाना होगा। आत्मिक-शक्ति में कमी आने के कारण ही बुराई छूट नहीं पा रही है और अच्छाई धारण नहीं हो पा रही है। परमात्म शक्ति व वरदान हम सभी आत्माओं का अधिकार है जिसे राजयोग मेडिटेशन द्वारा अनुभव व प्राप्त किया जा सकता है।

एचइसी के अध्यक्ष जी.के. पिल्लई ने कहा कि ईश्वरीय शक्तियां ही विश्व को एकता के सूत्र में बांधती हैं। मानव शक्ति ने विश्व को विभक्त कर दिया है। वर्तमान समय मानव की पीड़ा बढ़ती ही जा रही है जिसका कारण है कि लोगों ने अपने आपको सत्यता और दिव्यता के अनादि स्रोत परमात्मा से विमुख कर लिया है। मुम्बई से आए प्रख्यात मनोचिकित्सक डॉ.गिरीश पटेल ने कहा कि विश्व में आध्यात्मिक शक्तियों का संचार करने का यह विश्व उत्सव है।

सांख्यिक वित्त सचिव विष्णु कुमार ने कहा कि मनुष्यात्माओं की आंतरिक अभिव्यक्ति का प्रत्यक्ष रूप उत्सव होता है। उत्सव की महत्ता ही यही है कि सभी प्रकार के भेदभाव भुलाकर लोग एकता के सूत्र में बंधे चले आते हैं। उड़ीसा से आईं ब्र.कु.कुलदीप ने कहा कि सर्व शक्तियों के सागर परमात्मा से बुद्धियोग लगाकर ही आत्मिक रुप से शक्तिशाली बना जा सकता है। इन शक्तियों की छत्रछाया में सफलता सुनिश्चित है।

रांची सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु.निर्मला बहन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि परमात्मा की याद सर्व सुख दायिनी है। 21 राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा राजयोग का अभ्यास कराकर गहन शान्ति की अनुभूति कराई। उत्सव में चैतन्य देवियों की मनोहारी झांकी निकाली गयी। दीपांजलि व नृत्य ग्राम के कलाकारों ने मोहक नृत्य प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समाज में...

मनाते हैं। हम आपसी टकराव से बचने के लिए एक-दूसरे का आदर करें।

पटना के सांसद तथा सुप्रसिद्ध अभिनेता शत्रुघन सिन्हा ने कहा कि खुशहाली और शुभभावना की कामना को लेकर किया जा रहा यह आयोजन अवश्य ही भय से त्रस्त, सारे जंजालों से ग्रस्त समाज को श्रेष्ठ बनायेगा। इसी प्रेम व शुभभावना के वरदान से हम समाज को एक सूत्र में बांध सकते हैं। नैरोबी से पधारी ब्र.कु.वेदान्ती ने कहा कि सत्यता व पवित्रता के आधार पर ही परमात्मा से वरदान प्राप्त हो सकते हैं।

माउण्ट आबू से पधारी वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.शीलू ने 108 ब्रह्माकुमारी बहनों की उपस्थिति में राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराकर विशाल जनसमूह को गहन शान्ति का अनुभव कराया।

ब्रह्माकुमारीज पूर्वी क्षेत्र की निदेशिका दादी निर्मलपुष्पा, ब्र.कु.रानी दीदी,दादी पुष्पाल, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.सुमन ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार, भवन निर्माण मंत्री छेदी पासवान, सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री अनिल कुमार भी उपस्थित थे।

अहंकार छोड़ समर्पण भाव अपनाएं

बैंगलोर। आदि चुनचनागिरी संस्थान मठ के श्री श्री बालगंगाधरनाथ स्वामी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित वैश्विक महोत्सव को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो लोग इस संस्था में नियमित आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण एवं राजयोग का अभ्यास करते हैं उन्हें स्थायी शान्ति की अनुभूति होती है। यदि हम ईश्वर के बारे में सोचना शुरू करते हैं तो सुख-शान्ति परछाई की तरह पीछे-पीछे आती है। हमें इस देह के धर्म को भुलाकर अहंकार को विगलित कर परमात्मा के प्रति समर्पण भाव अपनाना चाहिए। ब्रह्माकुमारी संस्था सदा ही सर्व आत्माओं को मन की शान्ति प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रही है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि इस उत्सव के माध्यम से जन-जन को यह शिव संदेश जाना चाहिए कि संसार की हर आत्मा सर्वशक्तिवान परमात्मा से मिलन मना सकती है और उनसे सुख-शान्ति व मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर सकती है। इस पुरूषोत्तम संगमयुग के समय में हम कल्याणकारी शिव से शक्ति प्राप्त कर जन्म-जन्म के लिए दु:खों से छूट सुखों से भरपूर हो सकते हैं।

लंदन से आए ब्र.कु.नेविल ने कहा कि मैं अपने जीवन से प्रसन्न हूँ क्योंकि मैने अपने जीवन में भगवान को पाया और उनसे प्यार व शक्तियां भी प्राप्त की। हमें अपने नकारात्मक विचारों को तुरंत ही त्याग देना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी संस्था के शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय ने कहा कि परमात्मा ही वह सत्ता है जो हमें सुख, शान्ति और पवित्रता का वरदान देकर एक सुखमय एवं शांतमय विश्व की स्थापना कर रहे हैं। मैक्सिको से आए ब्र.कु.अर्नेस्टो ने अपने अनुभव से सबको लाभान्वित किया।

सृष्टि चक्र की यह सुंदर बेला है

कलकत्ता। ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने वैश्विक उत्सव को सम्बोधित करते हुए कहा कि आत्मा रूपी ज्योत को सदा जगे रहने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान रूपी घृत की आवश्यकता होती है। अध्यात्ममय जीवन उमंग-उत्साह के पंखों से सदा दु:ख-अशांतिमय इस दुनिया से उपराम होकर उड़ता रहता है। शुद्ध स्वमान से देह-अभिमान समाप्त होता है और जीवन मधुर व सम्माननीय बनता जाता है। आत्म-ज्ञान हमें पवित्रता के महत्व को अनुभव कराता है और सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

ब्र.कु.निर्मला दीदी ने कहा कि ईश्वरीय स्नेह के बगैर तो जीवन का मर्म ही नहीं रह जाता। पूरे सृष्टि चक्र में यह एक ऐसी सुंदर बेला है जब आत्मा को परम आत्मा का प्यार व पालना प्राप्त होती है। आत्मा सम्पूर्ण तृप्त होकर जन्म-जन्म का भाग्य बना लेती है। आप सभी हमारे भाई-बहने हैं और उस परमपिता की संतान है अत: आप भी उनसे सर्व प्राप्ति करें ऐसी शुभ आश से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। रामकृष्ण मिशन के सचिव ने कहा कि नकारात्मकता व बुराई से बचने के लिए मेडिटेशन का अभ्यास करें। ब्र.कु.कानन व ब्र.कु.मधु ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

चित्त परमात्मा में लगाएं

श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, सांख्ययोग, बुद्धियोग आदि विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। इनमें मुख्य रूप से सभी प्राणियों में विद्यमान आत्मा के शाश्वत स्वरूप पर अधिक बल दिया गया है। इसमें एक सुंदर भाव यह भी है कि जब बुद्धि काम न करे तो एक ईश्वर का आधार लेकर उनको अपनी बुद्धि समर्पित कर दें। भगवान ही एक ऐसी चेतना है जो हमें अंधकार में भी प्रकाश की किरण व आशा की किरण दिखाता है। जैसे थके-हारे मन और निर्णय ले पाने में असमर्थ बुद्धि के कारण व्यक्ति कई बार डिप्रेशन में चला जाता है, दिलशिकस्त हो जाता है, उस समय वह मन को सही दिशा में ले जाने के लिए आवश्यक शक्ति का अभाव महसूस करता है। ऐसे समय पर आशा की किरण तभी दिखाई पड़ती जब मार्ग प्रशस्त करने के लिए स्वयं ईश्वरीय बौद्धिक सत्ता अवतरित होती है। परमात्मा ही मनुष्य के मन को भ्रमित करने वाले अनेक प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वे सत्य ज्ञान देते हैं कि तुम शरीर नहीं आत्मा हो, देह से भिन्न, सूक्ष्म शक्ति, चैतन्य शक्ति आत्मा हो।

इसके साथ ही भगवान ने आत्मा का ज्ञान देना प्रारंभ किया। उन्होने बताया कि यह शरीर कर्म करने का एक क्षेत्र है जिसमें बोया हुआ भले और बुरे कर्म का बीज संस्कार रूप में सदैव उगता है। दस इंद्रियों के क्षेत्र का ये विस्तार है और

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

प्रकृति से उत्पन्न तीन गुणों सतो, रजो व तमो से प्रभावित होकर मनुष्य को कर्म करना पड़ता है। वह क्षण मात्र भी कर्म के बिना नहीं रह सकता है इसीलिए संसार को कर्मक्षेत्र या कुरूक्षेत्र कहते हैं। भगवान अर्जुन को कहते हैं कि सुख-दु:ख, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान को सहन करना एक भरतवंशी पर निर्भर करता है। भावार्थ ये है - गीता के दूसरे अध्याय में अगर सबसे पहला विधान भगवान यही बताते हैं कि भरतवंशी का सबसे बड़ा संस्कार है सहन करना। तो सुख-दु:ख, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान के सहन करने वाला युद्ध कैसे करेगा ? यहां यह बात स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि वास्तव में महाभारत में हिंसक युद्ध की बजाय अपने अंदर के विकार या बुराइयों से मनोयुद्ध करने की बात है। भगवान अगर हिंसक युद्ध की प्रेरणा दे तो आज के संसार में मनुष्य द्वारा किए जा रहे हिंसक कार्यों में और भगवान की प्रेरणा में क्या अंतर रह जायेगा। आज की दुनिया का मनुष्य हिंसक युद्ध की प्रेरणा दे सकता है लेकिन भगवान तो मनुष्य को ऐसे घृणित कार्य से ऊपर उठाते हैं। विषयों में लिप्त चित वृत्तियां उसी प्रकार का विषयाकार ले लेती हैं जैसे जल साँचे के अनुसार अपना आकार बना लेता है। ये क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ का संघर्ष है। जिसमें आसुरी वृत्ति का सर्वथा शमन कर परमात्मा में चित वृत्ति को स्थित करना है।

परमात्म शक्ति द्वारा ...

जयपुर ब्रह्माकुमारीज सबजोन की निदेशिका ब्र.कु.सुषमा बहन ने कहा कि अज्ञान की वजह से मनुष्य भौतिक सुखों व उपलब्धियों को ही सच्ची उपलब्धि या सम्पूर्ण विकास मान रहा है। लेकिन ध्यान दें कि दुनिया में बढ़ते रोग क्या इन विकास व उपलब्धियों को मूल्यहीन नहीं बना रहे हैं। जब तक मनुष्य का आत्मिक विकास न हो, मानवता का विकास न हो, तब तक विज्ञान का विकास या आर्थिक विकास उसे तृप्त नहीं कर सकेगा। राजयोग केवल मन को शांत करने वाली साधना नहीं है बल्कि इसमें स्वयं को आत्मिक स्वरूप में स्थित करके मन-बुद्धि निराकार सर्वशक्तिवान परमात्मा के स्वरूप पर स्थिर करना होता है। राजेन्द्र भानावत, सचिव, ग्रामीण विकास राजस्थान, न्यायमूर्ति एन.के.जैन, अध्यक्ष मानव अधिकार आयोग राजस्थान तथा जसबीर सिंह ने भी कार्यक्रम में अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। ब्रह्माकुमारीज सुरक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.अशोक गाबा, ब्रह्माकुमारीज प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.हरीश ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन किया ब्र.कु.चन्द्रकला एवं ब्र.कु. सत्यनारायण गुप्ता ने।

नारी सशक्तिकरण का सजीव उदाहरण हैं ब्रह्माकुमारी बहनें

गुहाटी। असम इंजीनियरिंग संस्थान के खेल मैदान में सम्पन्न वैश्विक उत्सव में जमा हुए प्रतिष्ठित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए मेघालय के राज्यपाल महामहिम रणजीत शेखर मुशहारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें नारी सशक्तिकरण का सजीव उदाहरण हैं। पूरे विश्व में शान्ति व अहिंसा का साम्राज्य स्थापित करने के लिए नि:स्वार्थ भाव से सेवारत इन दृढ़इच्छा शक्ति वाली बहनों के व्यक्तित्व से पावनता, प्यार व शान्ति की प्रत्यक्ष झलक दिखाई देती है। नि:संदेह यह हृदयस्पर्शी बात है कि विशाल जनसमूह आध्यात्मिक शक्तियों के समर्थन व असत्य के प्रतिपक्ष में आंतरिक चेतना का स्पंदन अनुभव कर रहा है।

ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.चक्रधारी ने कहा कि राजनीति, व्यापार, समाज सहित पारिवारिक क्षेत्र में भी लोग हताश व निराश अनुभव कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि परमात्मा आशीर्वाद एवं शक्तियों से हमें चिन्ताओं और तनावों से मुक्ति दिलायेगा। परमात्मा कहते हैं, मेरे बच्चों, कभी चिन्तित मत हो। आंतरिक शक्तियां व मानसिक शान्ति पाने के लिए मेरी ओर देखो।

ब्र.कु.चक्रधारी ने 108 ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ सामूहिक ध्यान अनुभूति कराके पूरे मैदान को पावनता से भर दिया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे गुहाटी विश्वविद्यालय के उप कुलपति डॉ. ओखिल मेधी ने भावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि 'मुँह बाये खड़ी वर्तमान समस्याओं का जब कोई समाधान दिखाई नहीं देता तो शान्ति व मन की शक्ति पाने के लिए हम केवल परमात्मा में ही विश्वास केन्द्रित करते हैं लेकिन उसका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमें सच्चाई व अहिंसा जैसे मूल्य अपने जीवन में धारण करने होंगे।

पोलेण्ड से पधारी केन्द्र निदेशिका ब्र.कु.हलीना बहन ने कहा कि आध्यात्मिकता के प्रेरणा स्त्रोत भारत देश की ओर पश्चिमी देश उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे हैं। भौतिकवाद ने वांछित खुशियां लाने की बजाय विकट समस्याएं पैदा कर दी हैं। राजयोगाभ्यास से हम आंतरिक शक्तियों की अनुभूति करके न केवल स्वयं बल्कि अन्य आत्माओं को भी प्रकाशमान कर सकते हैं। माउण्ट आबू से पधारे ब्र.कु.मोहन सिंघल ने सभी को शुभकामनाएं भेंट की।

स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.शीला ने स्वागत सम्बोधन किया। रंग-बिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़ने व दिलकश आतिशबाजी के अलावा सामूहिक दीप प्रज्जवलन पर करतल ध्वनि करने वाले जनसमूह ने दामोदर बोरा के नेतृत्व में समूह गान, भीलवाड़ा की प्रिया द्वारा 151 बर्तन सिर पर रखकर किये गये नृत्य, कालबेलिया लोकनृत्य तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दीपक शर्मा के नेतृत्व में 51 बांसुरी वादकों की प्रस्तुति का आनंद उठाया।

परमात्मा का प्यार तूफान को तोहफे में बदल देता है

लखनऊ। परमात्म-शक्तियां हमारी विरासत हैं। परमात्मा से विमुख होने के कारण उससे होने वाली प्राप्तियों से वंचित रहना पड़ता है।

उक्त विचार ब्रह्माकुमारी संस्था की अति.मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित वैश्विक महोत्सव में उपस्थित हजारों लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि ईश्वरीय कार्यों में विघ्न तो आते हैं लेकिन विजय परमात्मा के साथ रहने वालों की ही होती है। परमात्मा के प्यार में लवलीन रहने से तूफान भी तोहफा बन जाते हैं।

उत्तरप्रदेश स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि आज जो भी समाज में तनाव, बिखराव बढ़ रहा है उसका मूल कारण हमारी देह-अभिमानी स्थिति है। जब हम स्वयं को आंतरिक रूप से कमजोर कर लेते हैं तो परिस्थितियों के दास बन जाते हैं।

इस अवसर पर उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सुखदेव राजभर, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के लखनऊ खण्डपीठ के न्यायमूर्ति एस.एन.शुक्ला, महापौर दिनेश शर्मा, स्वास्थ्य मंत्री अवधपाल सिंह यादव ने भी अपनी शुभकामनाएं दी।

दादी हृदयमोहिनी सहित 108 तपोनिष्ठ राजयोगिनी बहनों ने सभा को राजयोग का अभ्यास कराकर गहन शान्ति का अनुभव कराया। केवल एण्ड कुमार पार्टी के गीतों, रुकमणि जायसवाल की कत्थक नृत्य की प्रस्तुति, ममता माडर्न स्कूल के बच्चों द्वारा गाये गीत आकर्षक रहे।

लखनऊ। वैश्विक महोत्सव का उद्घाटन करते हुए दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन, उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सुखदेव राजभर, लखनऊ खण्डपीठ के न्यायमूर्ति एस.एन.शुक्ला, स्वास्थ्य मंत्री अवधपाल सिंह, महापौर दिनेश शर्मा तथा अन्य। महोत्सव में उमड़ा जनसमूह।

हृदय की स्वच्छता के लिए मेडिटेशन अपनाएं

भुवनेश्वर। उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम मुरलीधर चन्द्रकान्त भण्डारे ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित वैश्विक महोत्सव को सम्बोधित करते हुए कहा कि शान्ति की चाह में भटकता आज का भौतिकवादी मनुष्य इस उत्सव के द्वारा अवश्य ही परमात्म-शक्ति व वरदान का अनुभव कर जीवन में सच्ची आत्मिक शान्ति अनुभव कर सकता है। वर्तमान समय मानव के मन में असुरक्षा घर कर गई है। वह तनाव व गुस्से का शिकार हो रहा है। सावधानी एवं सुरक्षा को अपनाने से हिंसा से तो बचा जा सकता है लेकिन अंतर्मन में व्याप्त दानवी हिंसा से बचने के लिए हमें राजयोग मेडिटेशन को अवश्य अपनाना होगा। आध्यात्मिक मूल्यों का अभाव ही हिंसक घटनाओं को जन्म दे रहा है। हमारे व्यक्तित्व व चरित्र की पहचान ही हमारे श्रेष्ठ कर्म हैं। मैं सदा इस सिद्धांत का पालन करता हूँ कि हम सदा आपके मित्र हैं, यही एक रास्ता है जो कि हर विपरीत परिस्थिति में हमें विजय दिला सकता है। हमें अपने हृदय को प्रार्थना, मेडिटेशन व सर्व के प्रेम भाव से साफ करना चाहिए क्योंकि पवित्र हृदय में ही ईश्वर का वास हो सकता है। हम सभी के जीवन के लिए शान्ति व धर्म मुख्य आधार हैं तभी जीवन संतुलित बन सकता है।

माउण्टआबू स्थित ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका ब्र.कु.निर्मला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान की जितनी महीनता में जाएंगे उतना ही जीवन महान बनता जाएगा। ईश्वरीय शिक्षाएं ही श्रेष्ठ मत हैं जिन्हें केवल सुनना या वर्णन करना नहीं है बल्कि जीवन में धारण करना है। दिव्य गुणों के आधार से किया गया कर्म ही अलौकिक व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

आफ्रिका से पधारीं ब्र.कु.वेदान्ती बहन ने कहा कि परिवर्तन का आरंभ स्व से करना ही ज्ञानी का लक्षण है। दूसरों को परिवर्तन करने में लगा हुआ मनुष्य आत्म-चिन्तन के लिए समय नहीं निकाल पा रहा है। आध्यात्मिकता वह बोध है जिससे मनुष्य स्वयं को सर्व प्रकार की बुराइयों से मुक्त कर निर्मल व निष्छल जीवन बना सकता है।

बीजू पटनायक युनिवर्सिटी के वायस चांसलर ओंकारनाथ मोहन्ती, केआईआईटी युनिवर्सिटी के वायस चांसलर डॉ.अच्युत सामन्त, उड़ीसा के इन्फार्मेशन कमिश्नर जगदानंद, विधायक विजय कुमार मोहन्ती, विधायक भागीरथी बडजेना, विधायक अरविन्दो धाली, ब्र.कु.निरूपमा, ब्र.कु.सुलोचना, ब्र.कु.मन्जु, ब्र.कु.कुमुद, ब्र.कु.लीना तथा ब्र.कु.विजय भी कार्यक्रम की शोभा थे।

कार्यक्रम के दौरान राजयोग के अभ्यास द्वारा शान्ति व पावनता के सूक्ष्म वायब्रेशन्स का अनुभव कराती हुई ब्रह्माकुमारी बहनें।

अभी को है खुशी की चाह

प्रश्न - आज की जिंदगी भागमभाग की जिंदगी हो गई है। कोई कैरियर के लिए भाग रहा है, कोई किसी और चीज के पीछे भाग रहा है और कोई जिंदगी में यूं ही भाग रहा है। सचमुच, क्या हम जान पा रहे हैं कि हमें क्या चाहिए?

ब्र.कु.शिवानी : एकचुअली, शायद पता है, क्या चाहिए। लेकिन कई बार हमारी स्पीड इतनी ज्यादा हो जाती है क्योंकि हमें क्या चाहिए, वो हमें मालूम है, लेकिन बीच-बीच में रूक करके देखना पड़ेगा कि क्या हम उसी डायरेक्शन में चल रहे हैं जो हमें चाहिए। नहीं तो कई बार क्या होता है? हमें एक जगह से दूसरी जगह जाना है, यदि हम पहली बार उस स्थान पर जा रहा हैं तो हमें बीच में रूककर पूछना पड़ेगा कि मैं सही दिशा में जा रहा हूँ या नहीं। लेकिन अगर हम ये कहें कि मुझे रूककर पूछने के लिए टाईम नहीं है तो फिर ये हो सकता है कि हम जाना चाहते थे कहीं ओर, और पहुंच जाए कहीं ओर, फिर लेट न हो जाए। कई बार हम कहते हैं कि मुझे तो ये चाहिए था, मुझे तो जीवन में केवल ये चाहिए था। बहुत कुछ मिल गया, बहुत कुछ प्राप्त कर लिया लेकिन जो चाहिए था वो शायद अभी भी तलाश कायम है।

प्रश्न : बिल्कुल। और अगर हम इस भाग-दौड़ की बात करें, इन छोटी-छोटी मंजिलों की बात करें या अचीवमेंट की बात करें तो सर्वप्रथम पहली अचीवमेंट (सफलता) स्थूल रूप में देखते हैं तो वो ये कि मुझे बड़ी गाड़ी चाहिए, घर चाहिए, नौकरी चाहिए, पैसा चाहिए।

शिवानी बहन : एकचुअली, हमारा जो चाहिए का डेफिनेशन है, वो चेंज होता है। विच इज नैचुरल। एक स्कूल जाने वाले बच्चे के लिए हैं मुझे 10वीं तक अच्छे मार्क्स चाहिए। फिर 12वीं, फिर ग्रेजुएशन में भी अच्छे मार्क्स से पास हो जाऊं। अच्छा जॉब प्राप्त हो। फिर फैमिली शुरू हो गई तो अदर रेस्पॉन्सिबिलिटी बढ़गई। तो वो सब है ही, और वो सब चलता भी रहेगा। दैट्स द पार्ट ऑफ लाईफ। लेकिन ये सब कुछ करते हुए, जैसे अगर आप से ही अभी पूछें कि डोन्ट थिंक टू मच, बहुत लॉजिकली एनालाईस (तर्कमय विश्लेषण) मत कीजिए अपनी लाईफ को। लेकिन वैसे ही अगर अपने आपसे पूछो कि आखिर मुझे क्या चाहिए? या अभी इस क्षण ही मुझे क्या चाहिए। तो उत्तर आयेगा कि खुशी चाहिए। खुशी एक आंतरिक प्राप्त है जो अपने अंदर से मिलती है। हरेक को खुशी चाहिए, चाहे वो बच्चा है, चाहे वो रिटायर्ड है, चाहे वो उसके बीच वाली स्टेज पर हो, लेकिन खुशी, शांति, प्रेम ये हम सबको चाहिए। और हम ये जो कुछ भी कर रहे हैं ना जैसे घर से निकल रहे हैं, कैरियर बना रहे हैं। चाहे वेतन हो या महत्वपूर्ण पद हो इन सब चीजों को पाने के लिए भागते मनुष्य को फिर भी इनसे स्थायी खुशी प्राप्त नहीं हो पाती।

खुशनुमा जीवन जीने की कला

(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारीज से)

-ब्र.कु.शिवानी

लंदन। प्रसिद्ध योगाचार्य स्वामी रामदेव ने अपनी विदेश यात्रा के दौरान ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा की जा रही आध्यात्मिक सेवाओं को जाना। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान मानव कल्याण सेवा संस्थान के सदस्यों द्वारा उन्हें प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु.मोरिन एवं ब्र.कु.जेमिनी।

आस्था व दृढ़ संकल्प का रचा नया इतिहास

महोत्सव के दौरान ब्र.कु.सोम बहन, ब्र.कु.नलिनी बहन, ब्र.कु.संतोष बहन, कथावाचक भूपेन्द्र पाण्डे, ब्र.कु.रमेश शाह तथा ब्र.कु.जयंति बहन परिलक्षित हैं।

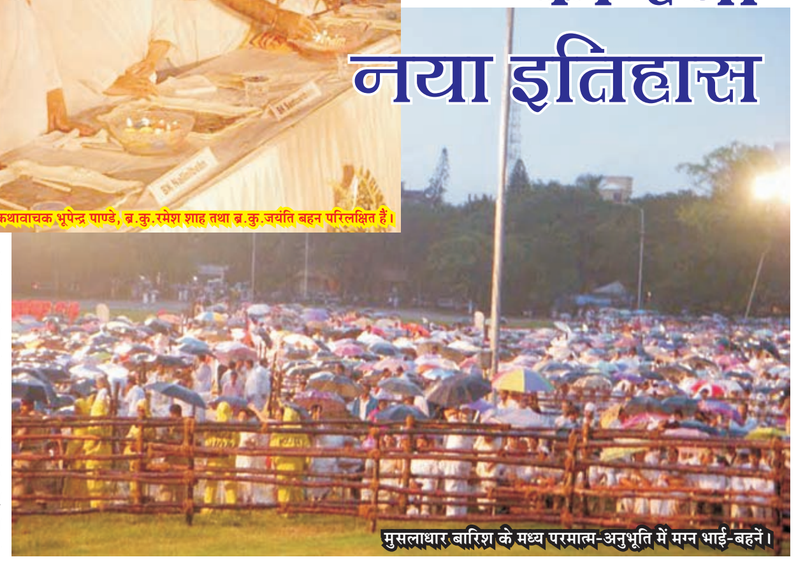

मुसलाधार बारिश के मध्य परमात्म-अनुभूति में मग्न भाई-बहनें।

मुम्बई। मुसलाधार बारिश में भी अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम पर अडिग रहते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़े हजारों भाई-बहनों ने वैश्विक उत्सव को मैदान में एक फुट पानी जमा होने के बावजूद, सफल बनाते हुए आस्था एवं दृढ़संकल्प की ऐसी अद्भुत मिसाल पेश की कि अगले दिन सभी समाचारपत्रों ने आवरण पृष्ठ पर इसकी सचित्र चर्चा की।

ब्र.कु.दिव्या बहन द्वारा संचालित कार्यक्रम का मंच पुष्पसज्जित था।

ब्रह्माकुमारीज न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह ने उत्सव के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए कहा कि परमात्मा का आशीर्वाद पाने का समय आ गया है। परमात्म-स्नेह रंगी मुलुंद की 21 कुमारियों ने सुंदर नृत्य द्वारा उस दर्शक समूह का स्वागत किया जो वर्षा की परवाह न करते हुए उमड़ आया था।

महाराष्ट्र एवं-आन्ध्रप्रदेश स्थित केन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.संतोष ने स्वागत उद्बोधन में इन साहसी दर्शकों के प्रति आभार जताया।

प्रतिष्ठित भागवत कथावाचक भूपेन्द्र पाण्डेय ने गदगद होते हुए कहा कि बंद कमरो व पर्वत शिखरों पर तो तपस्या करते बहुत से लोग देखे लेकिन पहली बार बारिश में भीग कर तपस्या करते हजारों आस्थावान व्यक्तियों को देख रहे हैं। परमात्म स्नेह व आस्था का यह अद्भुत दृश्य है। ब्र.कु.योगिनी ने सामूहिक ईश्वरीय अनुभूति करायी तो पूरे मैदान में शान्तिमय खामोशी छायी हुई थी। बोरीवली की कुमारियों की आकर्षण नृत्य प्रस्तुति के बीच वैश्विक उत्सव का थीम गीत रिलीज किया गया।

ब्र.कु.नलिनी ने संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के हवाले से अपने जोश भरे उद्बोधन में कहा कि परमात्मा का स्नेह व आशीर्वाद पाने का अंतिम आहवान हमारे कानों में गूंज रहा है। विदेश में आयोजित उत्सवों के अनुभव सांझे करते हुए ब्र.कु.जयंति ने उत्सव के आध्यात्मिक रंग और गहरे कर दिये।

नदीम-श्रवण की विख्यात जोड़ी वाले संगीत निदेशक श्रवण की उपस्थिति का करतल ध्वनि से स्वागत हुआ। उन्होने थीम गीत का संगीत संयोजन किया था।

मुम्बई केन्द्रों की प्रेरक आत्माओं की शुभकामनाओं से उत्सव का समापन हुआ।

परमात्म-शक्ति द्वारा होगा सृष्टि परिवर्तन

जयपुर। वर्तमान समय विज्ञान की शक्ति, राज शक्ति, धर्म शक्ति एवं प्रकृति की शक्ति मौजूद होते हुए भी हम सुख का नहीं वरन् दुख का अनुभव कर रहे हैं। अन्य कोई भी सत्ता या शक्ति अशांति व समस्याओं से घिरे विश्व का उद्धार नहीं कर सकती, इसका एकमात्र समाधान है आध्यात्मिक शक्ति। आज हम दूसरों को कन्ट्रोल करने की कोशिश कर रहे हैं जो शक्ति का नहीं बल्कि कमजोरी व हिंसा का परिचायक है। आज सत्य, अविनाशी व अहिंसक शक्ति की आवश्यकता है। आत्मिक शक्ति से सम्पन्न मानव ही अन्य सभी स्थूल शक्तियों का सही उपयोग कर सकता है। हमें श्रेष्ठ कर्म करने, शान्ति व सुख से रहने तथा सत्य पथ पर चलने के लिए परमात्म-शक्ति की आवश्यकता है।

उक्त विचार यूरोप स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.सुदेश दीदी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति के लिए आयोजित वैश्विक उत्सव को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि आज इंसान गलत कर्म तो बिना सोचे समझे कर लेता है लेकिन अच्छा कर्म सोच-समझकर भी नहीं कर पा रहा है। इसका कारण ही यही है कि आत्मा में शक्ति क्षीण हो गई है। आत्मिक स्वरूप में स्थित नहीं होने के कारण उसकी स्थिति ऐसी हो गई है जैसे लाइट होते हुए भी स्वीच आन न कर पा रहा इंसान अंधेरे को भगाने के लिए संघर्ष कर रहा हो। आत्मा को भरपूर कर सृष्टि परिवर्तन करने के लिए परमात्म शक्ति की आवश्यकता है।

राजस्थान के ऊर्जा मंत्री डॉ.जितेन्द्र सिंह ने कहा कि गीता में ईश्वर द्वारा किये गये वायदे के अनुसार जब-जब धरती पर अन्याय व पाप की वृद्धि होती है तब मैं आकर सत्य धर्म की स्थापना करता हूँ, तो अवश्य ही संसार में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा। अपनी आध्यात्मिक सम्पदा के कारण ही भारत विश्व के आगे धर्म गुरू की भूमिका निभा रहा है। ब्रह्माकुमारी संस्था का यह प्रयास सराहनीय है क्योंकि हर समस्या की अंतिम दवा मेडिटेशन है।

कुवैत स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की प्रभारी ब्र.कु.अरूणा ने राजयोग की अनुभूति कराते हुए कहा कि अपने निज गुण शान्ति, पवित्रता, सुख, आनंद की अनुभूति करना ही है राजयोग। परमात्मा शक्तियों का सागर है उनसे सम्बन्ध जोड़ने से आत्मा कमजोरियों व बुराइयों से मुक्त हो गुणों से सम्पन्न बन जाती है।

मैक्सिको से पधारे ब्र.कु.अर्निस्टो ने भारतीय संस्कृति को विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बताते हुए कहा कि मुझे यह कहने पर गर्व महसूस होता है कि मैं भारतीय हूँ।

-शेष पेज 10 पर

अनादि स्वरूप को जागृत रखने का आह्वान

भोपाल। जिस तरह शरीर का पिता अपने बच्चे को अपना वारिस बनाता है ठीक उसी तरह परमपिता परमात्मा आत्माओं रूपी बच्चों को अपना वारिस बनाते हैं। किन्तु इस विरासत को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने को देह से भिन्न आत्मा तथा ज्योति स्वरूप परमात्मा की संतान समझें। जब हम अपना ऐसा दृष्टिकोण बना लेते हैं तब हमारा अपने अविनाशी पिता परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और हमें उससे वरदानों की प्राप्ति होने लगती है।

उक्त विचार लंदन से पधारी ब्र.कु.जयंति ने परमात्म शक्ति एवं वरदानों की अनुभूति विश्व महोत्सव में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हरेक की पहचान उसके कर्त्तव्यों से होती है इसलिए हम किसी को महात्मा या पापात्मा कहते हैं। जो आत्मा बिना किसी भेदभाव के मनुष्यात्माओं को प्रेम, शांति, शक्ति देकर उसके दुखों को हरते और सुख देते हैं, सभी का कल्याण करते हैं, पतितों को पावन बनाते हैं, उसे परमात्मा कहते हैं। आत्माएं अनेक हैं लेकिन परमात्मा एक है। वह सदा जन्म-मरण के चक्र से ऊपर है। सृष्टि के कल्याण अर्थ परकाया प्रवेश कर वे अवतरित होते हैं और कर्त्तव्य पूर्ण कर वापस चले जाते हैं। वर्तमान समय परमात्मा का दिव्य कर्त्तव्य चल रहा है। हम अपने अनादि स्वरूप को जागृत रखें और स्वयं को प्रेम, आनंद से भरपूर अनुभव करें।

ब्र.कु.सूर्य ने कहा कि भौतिक विज्ञान ने बाहर चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश कर दिया है किन्तु विडंबना है कि स्वयं सत्य ज्ञान के प्रकाश से वंचित होने के कारण अंधकार में डूबा हुआ है। देवी-देवताओं के प्रति हमारी श्रद्धा होने का कारण ही यह है कि हम उनके ही वंशज हैं। हमें रोज अपने मन की गहराइयों में उतरकर चिन्तन करना चाहिए कि मैं प्रेम-स्वरूप, शांति-स्वरूप व शक्ति-स्वरूप आत्मा हूँ।

भोपाल के वित्त मंत्री राघव जी ने कहा कि आज सारा संसार पथभ्रष्ट हो गया है, ऐसे समय में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा किया जा रहा भागीरथ प्रयास सराहनीय है।

भोपाल स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.अवधेश ने कहा कि परमात्मा अपने भक्तों की सर्व कामनाएं पूर्ण करने के लिए अवतरित हो चुके हैं। आवश्यकता है उन्हें पहचानने की।

गायक पुनीत मेहता ने ईश्वर की महिमा से युक्त मधुर गीत गाकर समां बांध दिया। मथुरा की वंदना बहन एण्ड पार्टी ने ५१ किलो वजन वाली दीप माला को सिर पर रखकर नृत्य प्रस्तुत किया।

गृह एवं परिवहन मंत्री नारायण सिंह कुशवाह भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

आध्यात्मिकता में ...

देह भान का त्याग कर परमात्मा की याद में रहने से ही आत्म-सशक्तिकरण होता है।

प्यूरिटी मैगजीन के सम्पादक ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि विश्व के नवनिर्माण की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है। ओआरसी की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व भर के 130 देशों में 8500 केन्द्रों के माध्यम से विश्व में सतयुग की स्थापना करने के लिए कृत संकल्प है।

स्वामी अग्निवेश ने ब्रह्माकुमारी संस्था के कागज के रावण जलाने की बजाए अपने अंदर विद्यमान असली रावण को जलाने के आह्वान की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

जमात-ए-इस्लामी-हिंद के सह सचिव जन मुहम्मद इकबाल मुल्ला ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सभी से कम से कम एक बुराई छोड़ने का संकल्प कराना महत्व रखता है क्योंकि समाज में निरंतर बुराइयां बढ़ रही हैं। आज जरूरत अपने अंदर विद्यमान बुराईयों को दूर करने की है।

मंच पर विराजित राजयोग साधना द्वारा सभा में शान्ति के वायब्रेशन्स फैलाती हुई 108 वरिष्ठ राजयोगिनी बहनें विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी रहीं। संसार में व्याप्त दस विकारों के प्रतीक रूप में तीस फुट ऊंचे रावण का पुतला कौतुहल का विषय रहा। इस पुतले के समक्ष लाखों लोगों ने अपने अंदर व्याप्त बुराईयों व कमजोरियों को त्यागने का प्रतिज्ञा-पत्र लिखकर स्वाहा किया।

मन की बातें

- ब्र.कु.सूर्य

प्रश्न -मेरा योग नहीं लगता है, मैं बहुत परेशान हूँ। ज्ञान भी मिला, भगवान भी मिला, परन्तु बाद में सुख नहीं मिल रहा है। कोई सरल सी विधि बताओ। हमसे बीज रूप स्थिति में स्थित होना तो होता ही नहीं।

उत्तर -बीज रूप योग की बात कुछ समय के लिए आप छोड़ दें। पहले पन्द्रह दिन योग-युक्त होने की तैयारी करें। क्या तैयारी करें? केवल दो बातें, परन्तु सारे दिन में दस बार। एक है....स्वयं को भृकुटी के मध्य चमकती हुई आत्मा देखना और दूसरी है... दूसरों के मस्तक में चमकती हुई आत्मा देखना। यदि आप स्वयं को आत्मा न देख सकें तो यह अनुभव करें कि मैंने इस देह में प्रवेश किया है। आपको मालूम रहे कि योग किनका नहीं लगता? यहाँ हम केवल दो धारणाओं पर ध्यान दें। एक है पवित्रता और दूसरा है विकर्म न हों। यदि अपवित्रता के संस्कार हैं तो बुद्धि भारी व अस्वच्छ रहती है और यदि छोटे-छोटे विकर्म होते रहे -जैसे कि दैहिक दृष्टि, व्यर्थ बातों में रहना, दूसरों के प्रति दुर्भावना रखना, कटु वचन बोलना -तो भी योग का सुख नहीं मिलेगा। यदि आप संसार की प्राप्तियों के पीछे बहुत भागेंगे तो भी परमात्म-सुख नहीं मिलेगा। कुछ पाना है तो कुछ छोड़ना ही पड़ेगा।

प्रश्न -मैं एक कन्या हूँ। बचपन से ही मेरे माता-पिता ने मुझसे भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया। मैं कभी भी खुश नहीं रही, तब से ही मेरे अंदर हीन-भावना घर कर गई। मैं अपने जीवन में कुछ अभाव सा महसूस करती हूँ। परन्तु अब मैं इस मनोस्थिति से निकलना चाहती हूँ। मुझे क्या पुरूषार्थ करना होगा?

उत्तर -ये कलियुग के अंत की एक विकृति है कि समाज में कहीं-कहीं कन्याओं की अवहेलना है और असमंजस तो तब होता है जब स्वयं नारी जाति ये भेदभाव करती है। हमें जानना चाहिए कि उदास व निराश भाव वाली कन्या जब माँ बनकर बच्चों को जन्म देगी तो उनकी मनोस्थिति भी वैसे ही होगी और इस तरह भावी पीढ़ी का पतन होगा।

ठीक है बहन, भले संसार में माँ-बाप यदि कन्याओं को प्यार नहीं करते लेकिन भगवान तो कन्याओं को ही ज्यादा प्यार करता है। प्यार के सागर के प्यार को अनुभव करके आप उस अभाव को भरें। जो कुछ किसी के भी साथ होता है वह अकारण ही नहीं होता। अब आप सब माताओं को सिखाओ कि वे ऐसा न करें। आप अशरीरीपन का अभ्यास करें तो परमात्म-प्यार अनुभव होगा। आप परमात्म-प्यार में मग्न रहें तो प्यार का सागर आपको बहुत प्यार करेगा। आपके माँ-बाप ने आपका तिरस्कार किया, तब ही तो आप शिवबाबा की बनीं। अब आप ईश्वरीय आनंद में जीवन व्यतीत करें। पास्ट को भूल जाएं, सेवा में व्यस्त रहें, अनेक आत्माओं का भी आपको प्यार मिलेगा। आप उदास न हों, उदास तो वे होते हैं जो दास हैं।

प्रश्न -मुझे डर बहुत लगता है। जरा सी आवाज होने पर मैं कांप जाती हूँ। मेरा डर मुझे शक्तिशाली नहीं बनने देता। कृपया मुझे निर्भय बनाने में मेरी मदद कीजिए।

उत्तर -हे आत्मन्, इस डर के कई कारण होते हैं। आप निगेटीव न लेना, मैं संक्षेप में बता रहा हूँ। जिसने पूर्व जन्मों में दूसरों को बहुत डराया है, वे अब बहुत डरते हैं। जिन्होंने पाप बहुत किये हैं, उनके पाप उन्हें डराते हैं। जिनकी मृत्यु किसी अति भयानक दुर्घटना से हुई वो उनके अंतर्मन में छप गया, उससे चित्त में भय समा गया। स्वयं में विश्वास की कमी भी मनुष्यों को भयभीत करती है।

अब शिव बाबा ने कहा है, तुम शिव-शक्तियां हो। मैंने अपनी सारी शक्तियां तुम्हें दे दी हैं। रोज कई बार स्वयं को याद दिलाओ कि मैं शक्तिशाली हूँ, सम्पूर्ण परमात्म-शक्तियां मेरे पास हैं, मुझे भय किसका...मेरे साथ तो स्वयं भगवान है। मैं तो अमर आत्मा हूँ। मैं तो मरती ही नहीं। मैं तो पुण्यात्मा हूँ, बार-बार स्वमान का अभ्यास करो तो आपके अंदर का भय चला जायेगा व सुषुप्त शक्तियां जागृत हो जाएंगी। इसके अलावा दस शक्तिशाली विचार भी लिखो व रोज उन्हें पढ़ो।

प्रश्न -मैं एक गृहणी हूँ, मेरे चार बच्चे हैं, मुझे उनसे बहुत मोह है। मैं यूं ही दुःखी होती रहती हूँ। मोह टूटता ही नहीं। परन्तु मैं मोहजीत बनना चाहती हूँ। मेरी मदद करें।

उत्तर -मोह तो हर आत्मा में अन्य किसी भी विकार की तरह समा गया है। क्योंकि आत्मा पूरा ही समय देह में रहती है इसलिए देह से प्यार हो गया है। मेरापन, मोह का मूल है। ये मेरे बच्चे हैं, ये मेरी वस्तुएं हैं, ये मेरा घर-सम्पत्ति हैं, जिसको हम 'मेरा, कहेंगे, उसमें मोह हो जाएगा। इस मेरे-पन को शिव बाबा पर समर्पित कर दो। 'सब कुछ तेरा -रोज इसका अभ्यास करो। साधनाओं में समर्पणता बहुत बड़ी धारणा है। इसका बार-बार अभ्यास चाहिए। रोज बैठकर विचार किया करो कि ये बच्चे नहीं, आत्माएं हैं। सभी चमकती हुई ज्योति हैं। क्या इससे पहले जन्म में ये सब मेरे बच्चे थे, क्या अगले जन्म में ये मेरे बच्चे बनेंगे? नहीं। ये तो देह के नाते हैं, बदलते रहेंगे। इससे धीरे-धीरे मोह कम होगा।

बार-बार अशरीरीपन का भी अभ्यास करो। ज्यों-ज्यों स्वयं के देह से मोह नष्ट होगा, बच्चों से भी निर्मोही बनती जाएंगी। मोह ज्यादा रहेगा तो शिव बाबा से प्यार नहीं रहेगा, परिणामतः उनका भी प्यार नहीं मिलेगा। परन्तु निर्मोही बनने का यह अर्थ कदापि नहीं कि आप बच्चों के प्रति कर्त्तव्य पालन न करें या उन्हें प्यार न करें। ये सब कुछ करते भी आत्मिक दृष्टि रखें तो मोह छूट जायेगा।

पटना। वैश्विक महोत्सव के दौरान शिवध्वज लहराकर जनसमूह का अभिनंदन करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, दादी निर्मलपुष्पा, ब्र.कु.रानी तथा अन्य।

कथा-सरिता

अहंकार

हा जी मुहम्मद नामक एक मुसलमान संत हुए हैं। उन्होंने साठ बार हज-यात्रा की थी और वे प्रतिदिन नियमित रूप से पांच वक्त नमाज पढ़ते थे। एक दिन उन्होंने स्वप्न में देखा कि स्वर्ग और नरक की सीमा पर एक फरिश्ता एक छड़ी लेकर खड़ा है। जो भी दिवंगत आत्मा वहां आती, उससे वह उसके शुभ और अशुभ कर्मों के बारे में पूछताछ करता और उनके अनुसार स्वर्ग या नरक में भेजता था। जब हाजी मुहम्मद की बारी आई, तो फरिश्ते ने पूछा - तूने अपने जीवन में कौन-से शुभ कर्म किए हैं? हाजी ने उत्तर दिया - मैंने साठ बार हज किया है। हाँ, यह तो ठीक है, मगर क्या तू जानता है कि इसका तुझे बड़ा गुमान है? इसी कारण जब भी कोई तुझसे तेरा नाम पूछता था, तो तू 'हाजी मुहम्मद' बताता था। तेरे इसी गुमान के कारण हज जाने का जो फल तुझे मिलना था, वह सारा का सारा नष्ट हो गया। इसके अलावा यदि तूने कोई अच्छा काम किया हो, तो बता दे। 'मैं साठ साल से पांचों वक्त नमाज पढ़ता आ रहा हूँ।' तेरा वह पुण्य भी नष्ट हो गया। वह क्यों? याद है तुझे, एक बार कुछ धर्म जिज्ञासु तेरे पास आ गए थे। उस दिन तूने केवल दिखावे के कारण रोज से ज्यादा देर तक नमाज पढ़ी थी। यही कारण है कि तेरी साठ बरस की नमाज की तपस्या निष्फल हो गई। फरिश्ते की यह बात सुन हाजी को बेहद दुःख हुआ। पश्चाताप - दग्ध हो उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। अचानक उनकी आँख खुली और उन्होंने अपने को सोता हुआ पाया। वे जान गए कि यह तो ख्वाब था, किन्तु अब उनकी अंदर की आँखें भी खुल गई। इस तरह स्वप्न में मिली सीख ने उन्हें पूरी तरह बदल डाला। गरूर और नुमाइश से उन्होंने हमेशा के लिए तौबा कर ली और वे नम्र बन गए।

धीरज का फल

भगवान बुद्ध भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में उन्हें प्यास लगी। आनन्द समीपस्थ झरने से पानी लाने गए। उन्होंने देखा कि कुछ समय पूर्व ही वहां से बैलगाड़ियां गुजरी है तथा बैलों ने सारा जल गंदा कर दिया है। वे वापस लौट आए और बुद्धदेव से बोले, यहां का जल गंदा है। मार्ग में हमें जो नदी मिली थी, मैं वहां का जल लाता हूँ। किन्तु, बुद्धदेव बोले, झरने से ही जल ले आओ। आनन्द जब झरने के पास गए, तो उन्होंने देखा कि जल अभी भी साफ नहीं हुआ है। वे वापस आ गए और बुद्धदेव को उन्होंने फिर जल के गंदा होने की बात बताई। बुद्धदेव ने उन्हें पुनः झरने का ही जल लाने भेजा, किन्तु गंदा जल देख आनन्द की पुनः लौट आए और बुद्धदेव ने पुनः उन्हें वापस भेजा। ऐसा तीन बार हुआ। चौथी बार जब आनन्द वहां गए, तो देखा कि मिट्टी और सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ चुके हैं तथा पानी आईने की भांति चमक रहा है। इस बार वे जल लेकर लौटे। तब बुद्धदेव बोले, आनन्द! हमारे जीवन रूपी जल को भी कुविचार रूपी बैल प्रतिदिन गंदा करते रहते हैं और तब हम जीवन से पलायन करते हैं। किन्तु, हमें भागना नहीं चाहिए, बल्कि मन रूपी झरने के शांत होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। इसके लिए धीरज की आवश्यकता है। तभी सब कुछ स्वच्छ दिखाई देगा, ठीक इस झरने की तरह!

समर्पण

महाभारत युद्ध खत्म हो चुका था। विजय रथ में अर्जुन को बिठाकर श्रीकृष्ण पांडव शिविर पहुंचे। कृष्ण रथ से उतरे,अपने पैरे के अंगूठे को रथ पर टिकाए रख उन्होंने अर्जुन को आदेश दिया - रथ से तत्काल उतरकर दूर जाकर खड़े हो जाओ। रथ से योद्धा का सारथी से पहले उतर जाना परंपरा के विरुद्ध था और दूसरा इस प्रकार शीघ्रता करना भी अर्जुन को समझ नहीं आ रहाथा,लेकिन वो तत्काल रथ से उतरे और दूर जाकर खड़े हो गए। इसक बाद श्रीकृष्ण ने ज्यों ही अपना पांव रथ से नीचे रखा रथ की ध्वजा से कपिराज अदृश्य हो गए और सारा रथ धूं-धूं कर जलने जलने लगा। कुछ ही समय में वह आग में तब्दील हो गया। यह दृश्य देख भय और आश्चर्य से कांपते अर्जुन ने कृष्ण से इसका कारण पूछा। श्रीकृष्ण ने बताया युद्ध में तुम्हारे ऊपर जिन दिव्य शस्त्रों का प्रयोग हुआ था उनके तेज से यह रथ तो कभी का ही जल चुका था। इसे मैने अपनी शक्ति से बचाए रखा था यदि तुम इससे उसी क्षण न उतरते तो इसके साथ तुम भी भस्म हो चुके होते। तुम्हारे समर्पण ने ही तुम्हारे प्राणों की रक्षा की है। समर्पण कमजोरी या कमतरता का प्रतीक नहीं होता। यदि वह परमात्मा के प्रति हो तो वह दृढ़-निश्चय और अनुशासन का प्रतीक होता है। इसे साध लेने पर मनुष्य स्वतः ही भगवद्कृपा का पात्र बन जाता है। वस्तुतः भगवद्कृपा तो निरंतर बरस रही है,लेकिन उसको पाने का पात्र बनने के लिए समर्पण आवश्यक होता है। प्रकृति का नियम है जहां जमीन नीचे और गहरी होती है वहीं वर्षा का जल इकट्ठा होता है वह ऊंचे पर्वतों पर नहीं ठहरता। समर्पण ईश्वर की कृपा का पात्र बना देता है।

हर अंक में हम आपको पन्द्रह सुंदर विचार पेश कर रहे हैं। जिन्हें आप सेंटर के बाहर एक बोर्ड पर लिखकर, सार्वजनिक स्थानों पर लगाकर, स्कूलों-कालेजों में लगाकर लोगों को श्रेष्ठ विचार से अपने दिन की शुरूआत करने का अवसर प्रदान कर सकते हैं। कुछ समय पश्चात हमें आशा है कि वे उस विचार को पढ़े बिना रह भी नहीं पाएंगे।

आज का विचार

1. जो मैं अब अनुभव कर रहा हूँ, वह अतीत का फल है, भविष्य में जो अनुभव करूंगा वह इस बात पर निर्भर करता है कि मैं 'अब' क्या करता हूँ।
2. यदि आप बहुत अधिक लोगों पर निर्भर रहते हैं तो इससे आपके निराश होने के अवसर बढ़जाते हैं।
3. जब प्रगति होती है तब परिवर्तन स्वाभाविक है। यदि आप परिवर्तन से डरते हैं तो उन्नति कैसे हो सकती है?
4. जब तक हम आत्म-सम्मान की भावना जागृत नहीं करते, तब तक हम दूसरों के अधीन रहेंगे।
. जब आप यह समझते हैं कि आपके सभी कार्य परमात्मा के लिए हैं तो हर कार्य एक सुखदायी अनुभव बन जाता है।
6. अगर मुझे अंधेरे से बहुत डर लगता है तो अपनी आँखें बंद कर लेना समझदारी नहीं है।
. यदि हर कार्य यह समझकर किया जाए कि भगवान हमारा साथी है, तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।
. परीक्षा की घड़ी मनुष्य को महान बनाती है, विजय की घड़ी नहीं।
9. यदि आप अपना दिल ईश्वर को दे दें तो आपको दिल के दौरे नहीं पड़ेंगे।
10. यद्यपि आप समय को परिवर्तन नहीं कर सकते, किन्तु यह महसूस अवश्य करें कि परिवर्तन का समय 'अब' है।
11. अगर आपको दूसरों के धंधे में मन लगाने की आदत है तो आपका अपने धंधे में दिवाला निकल जायेगा।
12. कुछ लोग इसलिए परिपक्व नहीं बन पाते, क्योंकि उन्हें भय होता है कि कहीं वे वृद्ध न हो जायें और कुछ इसलिए क्योंकि वे जिम्मेदारी लेने से मना कर देते हैं।
13. ईमानदार व्यक्ति कभी किसी अजनबी की नजरों से भयभीत नहीं होता।
14. पहाड़ जैसी विपत्ति को दूर करने के लिए सिर्फ थोड़ा सा साहस ही पर्याप्त है।
1 . जो व्यक्ति अपने आप को सही-सही समझ लेता है, वही अपना सच्चा साथी बन सकता है।

परमात्म वरदानों के अधिकारी बनें

हैदराबाद। परमात्म शक्ति एवं वरदानों की अनुभूति के वैश्विक महोत्सव में सभा को ईश्वरीय अनुभूति कराने वाली आध्यात्मिक विभूतियां थीं रशिया से आईं ब्र.कु.सुधा बहन, नैरोबी से आए ब्र.कु.निजार भाई तथा हैदराबाद स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.कुलदीप बहन।

देश-विदेश में मची परमात्म शक्तियों व वरदानों की अनुभूति की धूम

रायपुर। मुख्यमंत्री डॉ.रमनसिंह ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा शान्ति सरोवर में आयोजित वैश्विक महोत्सव में उपस्थित हजारों लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान व्यवहारिक रूप से वैश्विक सद्भावना का सबसे अच्छा उदाहरण है। यहां पर सब कार्य बिना किसी भेदभाव के परिवार के रूप में किये जाते हैं। जब यह एहसास सारे विश्व को हो जाएगा कि हम सभी एक परमात्मा की संतान हैं, उस दिन सारे विश्व में सद्भावना कायम हो जायेगी। प्रकृति ने हमारी जरूरतों के हिसाब से सब चीजें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई हैं। लेकिन यह चीजें संग्रह के लिए नहीं हैं। जब इंसान अपनी लालसा व स्वार्थवश प्रकृति के साथ छेड़खानी करने लगता है, तब यही शक्तियां विध्वंसकारी बन जाती हैं। मानव जाति का भला तभी होगा जब हम इन शक्तियों का सदुपयोग करना सीखें।

उन्होने कहा कि दुनिया में इंसान सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी कहलाता है किन्तु उसने अपने ही विनाश के लिए अणु और परमाणु बमों का निर्माण किया है। यह हथियार किसी और को नहीं बल्कि बेगुनाह व निरीह इंसानों को मारने के लिए बने हैं। उन्होने सेटेलाइट के माध्यम से आज के कार्यक्रम का 136 देशों में सीधा प्रसारण किया जाना विज्ञान के सदुपयोग का सबसे अच्छा उदाहरण बताया।

ब्रह्माकुमारीज इंदौर जोन के निदेशक ब्र.कु.ओमप्रकाश ने कहा कि हरेक शक्ति का कोई न कोई स्रोत जरूर होता है। जैसे घर में बिजली चाहिए तो पावर हाउस से कनेक्शन लेना होगा। उसी प्रकार आध्यात्मिकता का स्रोत परमात्मा है अत: उनसे शक्ति व वरदान प्राप्त करने के लिए उनके साथ सम्बन्ध जोड़ना होगा।

दक्षिण-पूर्व एशिया की आंचलिक निदेशिका ब्र.कु.मीरा ने कहा कि परमात्मा के लिए गायन है कि वह सुख व शान्ति का सागर है। जब हम राजयोग के द्वारा स्वयं को शरीर से अलग चैतन्य आत्मा समझकर परमात्मा को सम्बन्धपूर्वक याद करते हैं तो उनकी शक्तियों की हमें अनुभूति होती है।

माउण्टआबू से पधारे ब्र.कु.सूर्य ने कहा कि वर्तमान समय मनुष्य के जीवन में व्याप्त समस्त समस्याओं का प्रमुख कारण मन के नकारात्मक व व्यर्थ विचार हैं। नकारात्मक विचार उसी प्रकार की सृष्टि की रचना करते हैं इसलिए हमें अच्छा व श्रेष्ठ वातावरण बनाने के लिए अच्छे व शुभ विचार मन में लाने होंगे। मन में जितने सकारात्मक संकल्प होंगे उतना ही वायुमण्डल भी शुद्ध और पवित्र बनेगा।

ब्रिटेन के जिम रेयान ने कहा कि भारत देश में अनेक भगवान हैं लेकिन उनके देश में दो ही भगवान हैं -विज्ञान और प्रौद्योगिकी। लेकिन विज्ञान की इतनी तरक्की के बावजूद वहां के लोगों के जीवन में सुख नहीं है। भौतिक सम्पन्नता के बावजूद भी बहुत तनाव है। ब्रह्माकुमारी संस्थान में आने पर यहां के अपनत्व एवं नि:स्वार्थ स्नेह ने उन्हें बहुत प्रभावित किया।

तुर्की की सुश्री जिलियन सॉवेर ने कहा कि भारत देश आध्यात्मिकता की जननी है। ब्रह्माकुमारी संस्थान में अनुयायी नहीं बनाए जाते वरन् परिवार के सदस्य समझकर व्यवहार किया जाता है। यहां के लोगों की कथनी और करनी में समानता होती है, इसी बात ने बहुत प्रभावित किया।

महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा संचालित शक्ति निकेतन इंदौर की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रमों ने सर्व जनसमुदाय का मन मोह लिया।

परमात्म शक्ति एवं वरदानों की अनुभूति के लिए वैश्विक उत्सव का आयोजन भारत के अलावा विश्व के 120 देशों में हुआ। प्रस्तुत है कुछ देशों की झलकियां -

रशिया - दादी हृदयमोहिनी - खुशी है इस बात की कि आप और हम आज विश्व परिवर्तन के लिए परमात्मा की योजना को जानने के लिए मिल रहे हैं। हम सभी परमात्मा के बच्चे हैं इसलिए आध्यात्मिक रूप से हम सभी एक परिवार के हैं। परमात्मा शिव का दिव्य संदेश यह है कि अब देह व देह के सम्बन्धों को भूल अपने आत्मिक स्वधर्म शान्ति में स्थित हो जाओ। हम सभी यह संकल्प लें कि हम स्वयं दिव्य गुणों की धारणा करके विश्व को सुख-शान्तिमय स्वर्ग में परिवर्तित करेंगे। राजयोग मेडिटेशन का अर्थ ही है - मन को परमात्मा में लगाना। परमात्मा की तरफ लगा हुआ मन स्वाभाविक रूप से सुख, शांति, आनंद, प्रेम का अनुभव करता है।

लंदन - ब्र.कु.मोहिनी बहन - पहली बात जो सबसे ज्यादा मनुष्य के लिए फायदे की है, अनुभव करने की है, वो है स्वयं को जानना। जब हम 'मैं' शब्द कहते हैं तो मैं ये शरीर नहीं हूँ। यह शरीर तो मेरा है और इसे मेरा कहने वाली मैं एक चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ। यह अनुभव जितना बढ़ाते जाएंगे उतना परमात्म वरदानों का अनुभव होता जायेगा। ईश्वरीय अनुभूति में सबसे बड़ा विघ्न है देह-अभिमान।

स्पेन एवं फिलीपिंस - ब्र.कु.जयंति बहन - हमने शान्ति प्राप्त करने के लिए काफी बाह्य प्रयास कर लिए। सर्व भौतिक साधन अपनाने के बावजूद हम सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं कर पाए हैं। हमें यह समझना होगा कि शान्ति बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक रूप से सम्पन्न बनने पर अनुभव होगी। शांति से भरपूर व्यक्ति से चारों ओर शांति के वायब्रेशन फैलते हैं। इससे हजारों लोगों को शांति की अनुभूति होती है। शांति के लिए हर सरकार प्रयास कर रही है। इसके लिए बहुत से एग्रीमेंट भी हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ भी प्रयासरत है। हर व्यक्ति यदि स्वयं को परिवर्तन करने का लक्ष्य रखे तो विश्व में सकारात्मक परिवर्तन आता जायेगा। हम सभी के दैहिक धर्म भिन्न हो सकते हैं लेकिन हम आत्माओं का स्वधर्म तो शान्ति व प्रेम है। सर्व आत्माओं के प्रति शुभ व नि:स्वार्थ भावना रखने से परमात्म वरदान प्राप्त हो सकते हैं।

अहमदाबाद। परमात्म शक्ति ही सर्वोत्तम सत्ता है। इसके सत्य स्वरूप को पहचानने, प्राप्त करने या अनुभव करने का प्रयत्न मानव कर रहा है। स्वयं परमात्मा हमें अपने वरदानों से भरपूर करने एवं जीवन जीने की कला सिखाने के लिए नई राह दिखलाने का कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं। राजयोग परमात्म-अनुभूति करने की सहज विधि है।

उक्त विचार यू.एस.ए.स्थिति ब्रह्माकुमारीज सेन्टर्स की निदेशिका ब्र.कु.मोहिनी ने वैश्विक उत्सव के दौरान उपस्थित लगभग दस हजार के जनसमूह को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि देह से भिन्न हम चैतन्य आत्माओं के निज गुण ही हैं पवित्रता, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम। आत्म-स्वरूप में स्थित होकर ही हम स्व का व परमात्मा के सत्य स्वरूप का अनुभव कर सकते हैं। उन्होने राजयोग का अभ्यास कराकर उपस्थित जनसमूह को परमात्म-प्रेम से भावविभोर कर दिया।

कमल पुष्पों के आसन पर विराजमान आठ ब्रह्माकुमारी बहनों ने पूरे कार्यक्रम के दौरान राजयोग का अभ्यास कर सभा को पवित्रता व शान्ति के शक्तिशाली वायब्रेशन्स से अभिभूत किया।

ब्रह्माकुमारीज के सचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि भगवान के हम सभी बच्चे हैं इसलिए यह नाता होने के कारण हमें मात्र परमात्मा की अनुभूति ही नहीं बल्कि उनसे मिलने का सम्पूर्ण अधिकार भी है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़कर, उनको अपना बना लें तो उनकी दिव्य शक्तियों एवं वरदानों के हम अधिकारी बन जाएंगे। आत्म-ज्ञान व परमात्म-ज्ञान भी वे स्वयं आकर हम बच्चों को देते हैं।

गुजरात स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु.सरला दीदी ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताते हुए कहा कि परमात्म प्राप्तियों की यह महत्वपूर्ण बेला है, इस समय को पहचानकर हम स्वयं का परिवर्तन करें ताकि जीवन हमारा धन्य बन जाए। सृष्टि के परिवर्तन से पूर्व हम परमात्म-वरदानों की मदद से स्वयं को परिवर्तित कर लें ऐसी शुभ आशा से यह आयोजन किया जा रहा है।

महामण्डलेश्वर 1008 श्री भारती बापू महाराज ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि समाज के वर्तमान स्वरूप को देखते हुए जन-जन को समस्याओं से उबारने में परमात्म-वरदान व शक्ति ही सहायक सिद्ध हो सकती है। मुम्बई के केन्सर सर्जन डॉ.अशोक मेहता, गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष अशोक भाई भट्ट, प्रतिपक्ष के नेता शक्ति सिंह गोहिल ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन लंदन से आए ब्र.कु.गिरीश व ब्र.कु.मीलू बहन ने किया। कार्यक्रम के दौरान वैश्विक उत्सव के विषय को स्पष्ट करते हुए चित्रों से प्रिंट हुए बैग में परमात्म वरदान का स्लोगन, संस्था के परिचय का पाम्पलेट, स्थानीय सेवाकेन्द्रों के पते, ईश्वरीय प्रसाद, डिस्कवरी सीडी तथा पानी की बोतल गिफ्ट के रूप में सभी मेहमानों को भेंट की गई।

मास्को। ब्रह्माकुमारी संस्था की अति.मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी द्वारा विश्व की आत्माओं को आध्यात्मिकता द्वारा एकता के सूत्र में पिरोने के लिए की जा रही सेवाओं के लिए हाईएस्ट पब्लिक अवार्ड मेडल 'रशियास् प्राइड' से सम्मानित किया जा रहा है। उनके साथ है ब्र.कु.सुधा, ब्र.कु.चक्रधारी व ब्र.कु.विजय।